जनवरी 2018

वर्ष 30 षष्ठम् अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

7 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

9 समसामयिक सामान्य ज्ञान

15 आर्थिक परिदृश्य

18 राष्ट्रीय परिदृश्य

23 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

28 क्रीड़ा जगत्

31 विज्ञान समाचार

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 सारभूत तत्व कोष

40 युवा प्रतिभाएं

लेख

42 ऐतिहासिक लेख—उत्तरी भारत के षोडश महाजनपद

44 कैरियर लेख—(i) भारतीय रेल में युवाओं के लिए अवसर

46 (ii) राजस्थान पुलिस आरक्षी परीक्षा, 2017

हल प्रश्न-पत्र

50 हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग परिचालक भर्ती परीक्षा, 2017

55 मध्य प्रदेश पुलिस आरक्षक (जनरल ड्यूटी) भर्ती परीक्षा, 2017

62 छत्तीसगढ़ संयुक्त सीधी भर्ती परीक्षा, ग्रेड 'सी', 2017

91 राजस्थान पशुधन सहायक सीधी भर्ती परीक्षा, 2016

97 मध्य प्रदेश लैब टेक्नीशियन, फिजियोथेरेपी टेक्नीशियन स्टाफ नर्स एवं अन्य पदों हेतु संयुक्त भर्ती परीक्षा, 2017

106 बिहार शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2017

116 बिहार कर्मचारी चयन आयोग इण्टरमीडिएट स्तरीय (प्रा.) परीक्षा, 2017

123 एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा, 2017 (प्रथम चरण)

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2017

130 तर्कशक्ति

133 गणितीय अभियोग्यता

137 English Language

140 आगामी मध्य प्रदेश पटवारी चयन परीक्षा, 2017 हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

144 ज्ञान वृद्धि कीजिए

145 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

हीन भावना से प्रेरणा ग्रहण कीजिए

"Fear is the thought of admitted inferiority."

— Elbert Hubbard

अपने को तुच्छ या हीन समझने के कारण हम अपनी बहुत हानि अकारण कर बैठते हैं. सामर्थ्य होते हुए भी अपने को असमर्थ मान बैठते हैं. मनोविश्लेषण की भाषा में इसको हीनता की ग्रन्थि (Inferiority complex) कहते हैं. इस मनोग्रन्थि के फलस्वरूप व्यक्ति असुरक्षा और असमर्थता के भाव द्वारा ग्रसित हो जाता है और वह अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा अपने को कमतर, निम्नतर अथवा तुच्छतर अनुभव करने लगता है. इससे व्यक्ति के कार्य, उसकी योग्यता और उसके भावनात्मक सम्बन्ध इस सीमा तक प्रभावित होते हैं कि उसका पूरा व्यक्तित्व ही छिन्न-भिन्न हो जाता है.

मनोविश्लेषण विज्ञान के प्रसिद्ध पुरोधा सिगमण्ड फ्रायड के सहयोगी डॉ. एलफ्रेड एडलर ने हीनग्रन्थि की खोज की. उनका मानना है कि जो कोई भी यह दिखाने का प्रयत्न करता है कि वह अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा श्रेष्ठ है, वह वास्तव में अपने हीनभाव को छिपाने का प्रयास कर रहा होता है. अधिकांशतः स्नायुरोगी हीनता ग्रन्थि के शिकार होते हैं. स्पष्ट है कि स्नायुरोगी अन्दर कहीं गहराई में छिपी अपनी असमर्थता एवं हीनता की भावना को ढककर अपने को दूसरे पर हावी करने का प्रयास करते हैं.

जो लोग दावा करते हैं कि वे अन्य लोगों की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं, अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए भाँति-भाँति से शेखी बघारते हैं, अपने बारे में बहुत बात करते हैं, सम्मान्य अथवा उच्च पदस्थ व्यक्तियों से बराबरी का दावा करते हैं अथवा उनके साथ निकट सम्बन्ध रखने का प्रदर्शन या बखान करते हैं आदि. वे लोग हीनता के भाव के वशीभूत होकर ऐसा करते हैं. कुछ वयस्क व्यक्ति या वृद्धजन जवान होने का दावा करते हैं अथवा अपने को जवान के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं, वे भी इसी दोष के शिकार होते हैं.

यदि कदाचित् आप अनुभव करते/करती हैं कि आप हीनभाव से ग्रसित हैं, तो आपको ज्यादा परेशान होने की आवश्यकता नहीं है. कोई भी व्यक्ति किसी समय हीनभाव का शिकार हो सकता है, प्रायः प्रत्येक व्यक्ति अपने में किसी-न-किसी प्रकार की कमी, किसी-न-किसी प्रकार के अभाव का अनुभव करता है और इस रोग का रोगी हो सकता है. इस दुनिया में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जिसे जीवन में सब कुछ प्राप्त हो, किसी प्रकार का असन्तोष न हो अथवा पूर्ण काम हो. किसी भी प्रकार की अपूर्णता का अनुभव हीनभाव को जन्म देने के लिए पर्याप्त है.